डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 7 मई 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-पहला | मई-2009 | मासिक पत्रिका

5

गुरु प्यार

(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवाल-जवाब)

16 पी. एस. आश्रम - राजस्थान

13

सतसंग

(स्वामी जी महाराज की बानी)

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

16 पी.एस. आश्रम - राजस्थान

31

प्रेम-विरह

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अनमोल वचन

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया फोन: 9950 55 66 71

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन: 9928 92 53 04

उप सम्पादिका : नंदिनी

सहयोग : रेणु सचदेवा, रोजी व परमजीत सिंह

86

सन्त बानी आश्रम

16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 15, 16 व 17 मई 2009 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे दिए गऐ पते पर पहुँचकर लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल, बेहरा इन्कलेव,
पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौंक)
नई दिल्ली - 110 087

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे:

98101-94555	98107-94597	98182-01999	98102-12138
राकेश कालिया	सोनू सरदाना	सुरेश चोपड़ा	राकेश शर्मा

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु प्यार

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

प्रश्न : गुरु के अंदर भगवान है। दुनिया के अंदर अपना जीवन बिताते हुए अपने आपको गुरु के प्रति समर्पित करने के बारे में सेवक का क्या रवैया होना चाहिए?

उत्तर : हाँ भई! बहुत अच्छा सवाल है। हम हर रोज़ सतसंग सुनते हैं, सन्त-महात्माओं की लेखनियाँ भी पढ़ते हैं। इस बारे में सन्तों ने बहुत कुछ बताया है। सन्तों ने संसार में इस तरह का जीवन व्यतीत करके हमें एक नमूना दिया होता है अगर हम भी इसी तरह अपना जीवन व्यतीत करेंगे, गृहस्थ में रहते हुए भजन-सिमरन करेंगे; अपने ख्यालों को पवित्र रखेंगे तो हमें कोई समाज बदलने या किसी खास किस्म के कपड़े पहनने की जरूरत नहीं। हमनें गुरु के साथ प्यार करना है और गुरु का कहना मानना है।

मैंने कल गुरु नानकदेव जी की बानी पर सतसंग किया था। जिसमें गुरु अंगददेव जी के बारे में बताया था कि आपने संसार की जिम्मेवारियाँ पूरी करते हुए **गुरु प्यार** में गुरु का हुक्म मानकर अपने जीवन को पवित्र बनाकर अपने-आपको गुरु का अंग साबित किया। गुरु को अपने ऊपर मेहरबान किया। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जब जीव शरण गुरु की आवे, कर्म धर्म सब भ्रम नसावे।
जो मार्ग गुरु दे बताई, सोई कर्म धर्म हुआ भाई।

सन्त यही कहते है कि पहले चाहे आप जितनी मर्जी खोज़ कर लें! सन्त-महात्माओं की हिस्ट्री पढ़ लें लेकिन जब 'नाम' प्राप्त कर लें फिर आपको अपने ख्याल को इधर-उधर भटकने नहीं देना चाहिए। मैं बताया करता हूँ कि जिसने जिंदगी में भजन-अभ्यास किया हो हमें उसके जीवन से फायदा उठाना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी ने दुनियावी तौर पर आर्मी में नौकरी की और गृहस्थ की जिम्मेवारियों को भी पूरा किया लेकिन अपने गुरु के प्यार और गुरु के बताए हुए रास्ते को मुख्य रखा। हममें यही कमी है कि हम **गुरु प्यार** को वह जगह नहीं देते जो हमें देनी चाहिए। हम दुनिया को ही खसम-खसाई बनाकर चलते हैं। मन का हुक्म मानते हैं; गुरु का हुक्म मानने के लिए तैयार नहीं होते।

कबीर साहब का एक शिष्य नामदान प्राप्त करके इधर-उधर घूमता रहा। जब उसे तकलीफ आई तो उसने रोकर गुरु को याद किया। कबीर साहब कहते हैं:

डग मग क्या करे कहें डुलाए जीओ।

तू अपने आपको क्यों भटकाता रहा अगर मेरे कहे अनुसार महारसों का रस, 'नाम' का रस पिया होता तो आज तुझे इतनी समस्या न बनती। सतगुरु दयालु होते हैं वे मदद करने से कभी नहीं झिझकते।

महाराज कृपाल अपने सतसंगों में लैला-मजनूं की मिसाल दिया करते थे। बेशक लैला-मजनूं का दुनियावी प्यार था। आमतौर पर आशिकों की कहानियाँ लोगों की जुबान पर होती हैं। एक बार एक बादशाह के दिल में ख्याल आया कि देखें तो सही की मजनूं कैसा है? जो अपने माशूक के प्यार में लकड़ी की तरह सूख गया है। किसी ने मजनूं से जाकर कहा कि तुझे एक बादशाह मिलना चाहता है। मजनूं ने कहा, "हाँ! मैं मिलने के लिए तैयार हूँ लेकिन वह लैला बनकर आए।"

अब आप सोचकर देखें! क्या हमारे अंदर इतनी मजबूती है? आमतौर पर हम लोग डेरों के लिए, जायदादों के लिए अदालतों में जाते हैं लेकिन परम पिता कृपाल एक ऐसे महान सन्त हुए हैं जो किसी भी जायदाद या डेरे से बंधे हुए नहीं थे। आप अपने आपको अपने गुरुदेव के प्रति समर्पित कर चुके थे।

मैंने डेरा ब्यास में आपका मकान देखा है। वह मकान काफी पैसों से बना था। आपने सब कुछ वहीं छोड़ दिया। आपके दिल में डेरे के

प्रति कोई नफरत, कोई अभाव नहीं था। आप सदा यही कहते थे कि हमने जो कुछ भी किया सब अपने गुरु के लिए किया। गुरु के प्रति अपने आपको कुर्बान कर देना ही **गुरु प्यार** है।

प्यारेयो! हम गुरु के प्रति अपने आपको तभी कुर्बान करते हैं जब हम गुरु के हुक्म और भजन को पहल दें; दुनिया को पीछे रखें।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''मैंने सदा यही माना कि परमात्मा पहले दुनिया बाद में।'' प्यारेयो! जब हम अपना सब कुछ, अपना दीन-ईमान गुरु को समझ लेते हैं फिर चाहे सारी दुनिया एक तरफ हो जाए और कहे कि यह ठीक नहीं लेकिन हम कभी भी मानने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि हमने अपनी आँखों से देख लिया होता है कि यह पूरा गुरु है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सतगुरु पूरा भेटया पूरी होवे जुगत।
हसेन्दयां खेलेन्दयां विचे होवे मुक्त।

गुरु हमसे संसार नहीं छुड़वाता, समाज नहीं बदलवाता। वह हमें संसार की जिम्मेवारियों से दूर नहीं करता बल्कि हम जिन जिम्मेवारियों को उठाने के लिए तैयार नहीं होते। वह कहता है कि आपने जो जिम्मेवारियाँ प्यार से उठाई हैं उन्हें निभाना आपका पहला फर्ज है। हम दुनिया के कारोबार को पहल देते हैं, विषय-विकारों से अपने मन को पीछे नहीं हटाते। हमारे अंदर **गुरु प्यार** कैसे जागेगा? हम विषय-विकारों की दलदल में गुरु के प्यार को नीचे दबा देते हैं। महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर पंजाबी का यह मुहावरा सुनाया करते थेः

हथ कार वन्नी, दिल यार वन्नी।

हममें से कितने ऐसे सतसंगी हैं जिन्होंने दुनिया के कारोबार करते हुए अपने गुरु की मनमोहनी सूरत आँखों में बसाई हो। भजन करते समय हम दुनिया की शक्लें आँखों के आगे ले आते हैं और गुरु का सिमरन भूल जाते हैं।

कबीर साहब का शिष्य धर्मदास एक नम्बर का धनी था। उस समय करन्सी की इतनी कीमत नहीं थी। वह चौदह करोड़ का मालिक था। जिसके पास इतना धन हो उसका व्यापार कितना बड़ा होगा? उसने जब कबीर साहब से 'नाम' लिया, नाम की कमाई की तो यही कहाः

सुपने इच्छया न उठे, गुरु आन तुम्हारी हो।

सतसंगी हर तरह का नुकसान सहन कर लेता है लेकिन कभी भी अपने गुरु की कसम खाने के लिए तैयार नहीं होता। धर्मदास ने कहा, ''गुरुदेव! मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ कि मेरे अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के झोंके नहीं उठते। सोते हुए मेरे अंदर दुनिया के ख्याल नहीं उठते तो जागते हुए क्या उठेंगे?''

हम जागते हुए जिन चीजों का ख्याल करते हैं वही चीजें हमारे स्वपन में आती हैं अगर हम जागते हुए गुरु की मनमोहनी सूरत को आँखों के आगे रखें और उसका दिया हुआ सिमरन अपनी जुबान पर रखें तो हमें स्वपन में भी गुरु जरूर मिलेगा।

इस संसार की रचना ही ऐसी है कि काल ने जीवों को फँसाने के लिए फंदे बनाए हुए हैं। महात्माओं का जाति तजुर्बा है कि आप अंदर के मण्डलों में जाकर अपनी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दें उतारकर पारब्रह्म में चले जाएं। वहाँ कोई लिंग-भेद नहीं कोई किसी को दुख नहीं देता। वहाँ से प्यार की दुनिया की रचना शुरु होती है। वहाँ पहुँचकर आपको पता लगेगा कि हम सासांरिक जिम्मेवारियां निभाते हुए किस तरह गुरु के प्रति अपना आभार प्रकट कर सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी इस मुत्तलिक एक कहानी सुनाया करते थे कि एक सवार घोड़े को लेकर जा रहा था। एक जाट हल्ट चलाकर अपनी खेती को पानी दे रहा था। सवार ने अपने घोड़े को पानी पिलाना चाहा। सवार जब अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए आगे लेकर गया तो घोड़ा टक-टक की आवाज से डरकर पीछे भागा। सवार ने जाट से

कहा, ''हल्ट रोक।'' जब जाट ने हल्ट रोका तो पानी एक सेकन्ड में ही खाली हो गया। सवार ने जाट से कहा, ''हल्ट चला दे।'' सवार घोड़े को बार-बार नज़दीक करता लेकिन घोड़ा बार-बार पीछे भाग जाता। जाट ने कहा, ''प्यारेया! पानी तो इसे टक-टक में ही पीना पड़ेगा।''

महाराज जी कहा करते थे, ''प्यारेयो! आपको दुनिया की जिम्मेवारियाँ भी निभानी पड़ेगी और भजन-सिमरन भी करना पड़ेगा लेकिन आप पहल गुरु के दिए हुए 'नाम' को दें, **गुरु के प्यार** को दें।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मुख की बात सगल स्यों करदा, जीव संग प्रभ अपने तरदा।

आप कहते हैं कि सतसंगी का, गुरुमुखों का जीवन इस तरह का होता है कि वे दुनिया में कारोबार भी करते हैं, बातें भी करते हैं लेकिन उनका दिल प्रभु से जुड़ा होता है। एक भजन में कहा गया है:

अजायब दी पुकार है, खड़क रही तार है।

प्यारेयो! तार खड़काने का यही मतलब है कि चौबीस घंटे ख्याल गुरु की तरफ ही हो। जुबान पर गुरु का 'नाम' हो। दिल और आँखों में गुरु की मन मोहनी सूरत और स्वरूप समाया हो।

सोहणे दे दर्शन दी खातिर, लक्खां लोग फकीर होए।

सोहने के दर्शनों की खातिर लाखों लोग घर-बार छोड़कर फकीर बन जाते हैं। जंगलों में डेरा लगा लेते हैं। हरड़ की तरह सूख जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार नहीं घटता लेकिन इन साधनों से परमात्मा नहीं मिलता फिर दुनिया में आ जाते हैं इन पर लोग हँसते हैं कि इतनी देर साधु बना रहा देखो! इसकी कैसी हालत है?

सन्त-महात्मा हमें दुनियादारी छोड़कर जंगलों में जाने का उपदेश नहीं करते। वे यही कहते हैं कि सुबह उठकर दो-तीन घंटे अभ्यास में लगाएं, अपने जीवन को पवित्र बनाएं। अपनी रोज़ी-रोटी अच्छे तरीके से कमाकर खाएं तो आप गृहस्थ में रहते हुए भी मुक्त हो सकते हैं।

एक बार मैं आर्मी से दो दिन की छुट्टी पर आया। मेरे साथ चार साथी और भी थे। हम सबने एक ही ट्रेन से वापिस जाना था। ट्रेन स्टेशन पर ठीक बारह बजे आती थी लेकिन हम घर से डेढ़ बजे निकले, ट्रेन ने तो छूट ही जाना था। हम जब वापिस पहुँचे तो हमारे साहब ने पूछा कि आप लोग लेट क्यों आए हैं? आर्मी में बहुत सख्त कानून होते हैं। हम चारों ने पहले कभी कोई गलती नहीं की थी। आमतौर पर एक गलती माफ कर देते हैं। सबने यही जवाब दिया कि ट्रेन निकल गई।

हमारे साहब ने मेरे पास आकर पूछा, ''तेरा क्या जवाब है?'' मैंने कहा कि ट्रेन तो सही समय पर थी। हम लोग घर से ही लेट निकले थे, आपकी मर्जी है हमें जो भी सजा दें; हम भुगतने के लिए तैयार हैं। मेरे सच बोलने पर साहब ने खुश होकर कहा, ''मैं तुम्हें माफ करता हूँ, आगे से ऐसा नहीं करना और हमेशा सच बोलना।''

मेरे दिल पर इस बात का बहुत असर हुआ कि एक घंटा आराम करने की खातिर हमें साहब के आगे पेश होना पड़ा। वहाँ भी सबका मन घबराकर सच बोलने को तैयार न हुआ। क्या हमने कभी सोचा! कई प्रेमी कितने-कितने दिन, कई-कई महीने अभ्यास पर नहीं बैठते, डायरी नहीं भरते अगर डायरी भरते भी है तो वही गलतियाँ बार-बार दोहराते हैं। गलती तो एक बार की ही काफी होती है। हम एक दुनियावी अफसर का इतना डर रखते हैं। क्या गुरु को हम अपने अफसर के बराबर भी नही समझते कि हम गुरु को क्या जवाब देंगे?

आपने भाई सुन्दरदास का जीवन पढ़ा है, उसे महाराज सावन के चरणों में बैठने का काफी मौका मिला था। उसने संसारी कर्मों का भी काफी भुगतान किया। उसे दयालु सावन ने पहले ही सब कुछ बता दिया था। वह बीस साल मेरे साथ रहा। हम एक ही मकान में इकट्ठे रहते और खाना खाते थे। हमारा आपस में बहुत प्यार था। वह हमेशा यही कहता, ''गुरु को एक मिनट भूलना इक्कीस मिनट भूलने के बराबर है। एक दिन भजन में न बैठना इक्कीस दिन के बराबर है अगर हम

एक महीना अभ्यास से गैरहाजिर होंगे तो इक्कीस महीनें गैरहाजिर होने के बराबर है। ऐसे ही अगर हम एक साल गुरु को याद नहीं करेंगे तो इक्कीस साल के बराबर है पता नहीं हमने इतनी देर संसार में रहना भी है या नहीं?''

हम दोनों का मुख्य काम अभ्यास था। हम रात को खेत में धूना लगाकर अभ्यास किया करते थे, हमारी आठ घंटे की बैठक होती थी। एक दिन अभ्यास के समय जलती हुई लकड़ी उसकी टाँग पर गिर गई। सोचकर देखें! कितना दर्द होता है अगर सुरत अंदर लग जाए तो सारे दर्द भूल जाते हैं। जब शरीर की सुरत ही न हो तो दर्द क्या होगा? उसने भजन से उठकर यही कहा, ''आज भजन में जितना रस आया है जिंदगी में पहले कभी नहीं आया।'' डाक्टर ने कहा कि इसकी टाँग काटनी पड़ेगी लेकिन जब परम-पिता कृपाल आए तो उन्होंने कहा, ''देखो प्यारेयो! इसका नाम भजन है। क्या तुममे से कोई है जो गुरु से लिव लगाकर अपने तन को भूल जाए?''

प्यारेयो! आजकल तो हम खेतो में ट्रैक्टर और मशीनरी से काम करते हैं। उस समय ऐसे साधन नहीं थे। खेती करने के लिए हमारे पास एक ऊँट और दो बैल थे। आमतौर पर लोग छिप-छिपकर हमारी बातें सुनते थे कि हमारे दिल में कितना **गुरु प्यार** है? लोग यही कहते कि इन्हें तो कोई फिक्र ही नहीं। एक का परिवार गुजर गया है और दूसरे ने शादी ही नहीं करवाई।

उस समय सुन्दरदास बुजुर्ग और मैं नोजवान था। मैं सुबह उठकर पानी गर्म करता और चाय बनाता। मैं नहा-धोकर उसे आवाज देता तब तक वह अपने सिमरन में लगा रहता था। मैं उसे आवाज देकर पूछता, “क्या जाग रहा है?” वह कहता, “हाँ जी! जाग रहा हूँ चाय न बनानी पड़े इसलिए ऐसे बैठा हूँ।” वह चाय पीते हुए यह मुहावरा बोलता थाः

भजन करन को आलसी, भोजन को होशियार।
तुलसी ऐसे मर्द को, लख वारी धिक्कार।

फिर वह नहा-धोकर चाय पीकर अपना कारोबार करता था। हम दोनों अपने अभ्यास में कभी गैरहाजिर नहीं होते थे। वह आमतौर पर यही कहता अगर आपसे कोई काम नहीं होता तो वह काम मैं कर लूँगा। हम जब तक इकट्ठे रहे हमने खाना बनाने और कारोबार के लिए तीसरा आदमी अपने साथ नहीं रखा। वह यही कहता थाः

तीसरा आदमी रलया ते काम गलया।

अगर कोई काम रह जाता तो हम वह काम रात को आसानी से कर लेते और हमारा सिमरन भी अच्छा चलता था। चाहे इत्तर वाला इत्तर न भी बेचे! कभी डब्बी खुली रह जाती है। आमतौर पर लोग मेरे पास आकर कहते कि हमें सन्तों से मिलना है। मैं उस समय खेती का कारोबार कर रहा होता था। मेरे हाथ में कस्सी होती, कपड़े भी अच्छे नहीं पहने होते थे। मैं उन लोगों से कहता, "आओ बैठो! अभी सन्त आ जाएंगे, हम बैठकर बातें करते हैं।" बातों-बातों में उन्हें पता चल जाता कि यह वही आदमी है हम जिससे मिलने के लिए आए हैं।

हमने कभी भी अपने आपको महात्मा साबित नहीं किया था। उस समय मेरे पास 'दो-शब्द' का ही भेद था। सुन्दरदास के पास महाराज सावन सिंह जी का दिया हुआ 'पाँच-शब्द' का भेद था।

कहने को बहुत कुछ है लेकिन समय हो गया है। यही विनती है कि अभ्यास के जो कार्यक्रम बनाए गए हैं उसके मुताबिक ही अभ्यास करें। मैं आप लोगों को हिदायत करता हूँ कि यहाँ आने से पहले अपने देश से अभ्यास के लिए तैयार होकर आएं।

आप लोग वहाँ लगातार अभ्यास नहीं करते, यहाँ देखा-देखी ज्यादा अभ्यास करते हैं ऐसा करने से सतसंग में नींद आने लगती है। प्रेमी कभी आँखें बंद करते हैं कभी खोलते हैं ऐसा नहीं होना चाहिए। आप खाना खाने के बाद अभ्यास पर न बैठे, इससे सेहत पर बुरा असर पड़ता है। यहाँ जो कार्यक्रम बनाए गए हैं उसके मुताबिक अभ्यास करेंगे तो आपको सुबह तीन बजे उठने में तकलीफ नहीं होगी।

✯✯✯

सतसंग

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

स्वामी जी महाराज की बानी

हम सब भाई-बहनों ने सोचना है कि हम यहाँ क्यों इकट्ठे हुए हैं? परमात्मा ने सब योनियां पैदा की है। पशु-पक्षी, घास-फूस, पेड़-पहाड़ ये सब कुछ मालिक ने ही बनाए हैं उसके हुक्म से ही चल रहे हैं। हम इंसान है हमें सोचना हैं कि इन योनियों में और इंसान में क्या फर्क है?

हर महात्मा ने इंसानी जामे को उत्तम और सब योनियों का सरदार कहकर ब्यान किया है। हमें पता होना चाहिए किसी बादशाह या किसी सरदार की कितनी जिम्मेवारी होती है? उसे जो ओहदा दिया गया है वह उसके लिए तैयार रहे। उसमें वही गुण हों जो उस ओहदे के लिए होने चाहिए क्योंकि उस पर दूसरों की भी जिम्मेवारी आती है।

प्रभु ने हमें इंसानी जामा दिया है। पशु-पक्षी अपनी उन्नति के बारे में नहीं सोच सकते क्योंकि उनमें बुद्धि नहीं, उनकी जिम्मेवारी भी हमारे ऊपर ही आती है। हमने सोचना है! परमात्मा ने हमें इंसान का जामा क्यों दिया है? सन्त-महात्माओं ने भजन-अभ्यास किया बहुत मेहनत की और हमें **सतसंग** के लिए कहा। वे हमारे लिए जो हिदायतें छोड़कर गए हैं क्या हम उन हिदायतों पर चल रहे हैं?

जिंदगी में **सतसंग** सबसे उत्तम है लेकिन हम यहाँ आकर भूल जाते हैं कि सतसंग किसे कहते हैं, हमने **सतसंग** से क्या फायदा उठाना है? क्योंकि संग-दोष सबको लगता है अगर स्वाति बूँद केले में पड़ जाए तो उसका काफूर बन जाता है अगर वही बूँद बंजर धरती पर पड़ जाए तो वह बेकार चली जाती है अगर भट्ठ में पड़ जाए तो भट्ठ उसे अपने जैसी ही राख बना लेता है अगर बाँस में पड़ जाए तो उसकी तवाशीर बन जाती है अगर वही बूँद साँप के मुँह में पड़ जाए तो जहर

बन जाती है अगर पपीहे के मुँह में पड़ जाए तो पपीहे को साल भर प्यास नहीं लगती। बूँद वही है लेकिन उसे जैसी-जैसी संगत मिलती है वह वैसा-वैसा रूप अख्तियार कर लेती है।

अगर इंसान जुएबाजों, शराबियां-कबाबियों की संगत करता है तो उसे भी शराब-कबाब और जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है अगर हम सन्त-महात्माओं या अच्छे पुरुषों की संगत करते हैं तो हमारे अंदर भी 'नाम' जपने का शौक और विरह पैदा हो जाती है। **सतसंग** में हमें हमारी कमियों का पता लगता है। आम जनता तो यही समझती है कि पशु-पक्षी हमारी खुराक़ के लिए ही बनाए गए हैं।

आप महात्माओं की बानियाँ पढ़कर देखें! खासकर हम सिक्ख लोग गुरु ग्रन्थ साहब और गुरु नानकदेव जी पर भरोसा करते हैं अगर हमें गुरु नानकदेव जी पर भरोसा है तो हमें उनकी तालीम पर भी भरोसा होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि पिता अच्छी शिक्षा दे और बच्चा न माने। जो महात्मा परमात्मा से मिल गया है अगर हम उस महात्मा की शिक्षा से अलग जा रहे हैं तो वह कैसे खुश होगा?

गुरु ग्रन्थ साहब में एक साखी आती है कि जब गुरु नानकदेव जी लाहौर गए उस समय दुनीचन्द अपने पिता का श्राद्ध कर रहा था। गुरु नानकदेव जी ने उसे बहुत कुछ समझाया कि जीवित माता-पिता का आदर करना ही भक्ति है। मरने के बाद उन्हें जो मर्जी खिलाओ-पिलाओ वह किसी फायदे में नहीं।

गुरु नानकदेव जी ने उसे समझाकर कहा, ''तू जिसकी खातिर यह खीर प्रसाद कर रहा है यह उसकी खुराक नहीं।'' दुनीचन्द ने कहा, ''मुझे कुछ नहीं पता हमारे बुजुर्गों ने जो रीत चलाई है मैं वही कर रहा हूँ।'' गुरु नानकदेव जी दिलों की जानते थे आपने कहा कि तेरा पिता भग्याड़ की योनि में है। वह एक झाड़ी में है तू उसके पास जा वह कई दिनों से भूखा है यह खीर प्रसाद उसकी खुराक़ नहीं। भग्याड़ की खुराक तो मीट होती है।

दुनीचन्द ने कहा, "मैं उस जानवर की बोली कैसे समझूँगा? हो सकता है वह मुझे देखते ही खा जाए! क्योंकि वह इंसानो को खाने वाला जानवर है।" गुरु नानकदेव जी ने कहा कि मैं तेरे साथ वायदा करता हूँ ऐसा नहीं होगा; वह तेरी बात समझ सकेगा और तुझे भी समझा सकेगा।

दुनीचन्द वहाँ गया और उसने पूछा, "पिताजी! आपको यह योनि क्यों मिली?" उसने कहा, "देख बेटा! मैं सारी जिंदगी शाकाहारी रहा लेकिन अफसोस! जब मेरा अन्त समय आया उस समय पड़ोस में कोई आदमी मीट बना रहा था, मुझे उसकी वासना आई; मेरी सुरत भी उसी तरफ खिंच गई मेरे श्वास निकल गए। मुझे वैसी ही योनि मिली यह मेरे अंत की कहानी है।"

अन्त मता सो गता।

एक वासना या बुरा ख्याल आने से ऐसी योनि मिल सकती है। क्या हमने कभी सोचा है कि हम अपने स्वाद के लिए सारी जिंदगी जानवरों की गर्दनें काटते है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लिए दिए बिन रहे न कोए।

आप जिसका गला काटते हैं वह आपका गला जरूर काटेगा यह परमात्मा का नियम है। हम देखते हैं कि समय पर दिन चढ़ता है, समय पर रात होती है। समय पर मौत पैदाइश होती है यह कुदरत का कानून है। सब मण्डल परमात्मा के कानून के मुताबिक चल रहे हैं अगर हम यह सब कुछ अपनी आँखों से देखते हैं तो यह भी सच है कि लिए-दिए बिन कोई नहीं रह सकता। कबीर साहब कहते हैं:

माँस माँस सब एक है मुर्गी हिरनी गाय।
आँख देख नर खात है ते बध्धे जमपुर जाए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कौन ऐसा समझदार व्यक्ति है जो जीभ के थोड़े से स्वाद के लिए अपनी गर्दन कटवाता है?''

गुरु ग्रन्थ साहब में सदना कसाई की कहानी दिल को दहला देने वाला वाक्या है। हम गुरु ग्रन्थ साहब को पढ़ते जरूर है, पढ़ते ही नहीं

पढ़वाते हैं और बैठकर सुनते भी नहीं क्योंकि आज के इंसान के पास इतना समय कहाँ हैं? पढ़ने और पढ़ाने का तभी फायदा है अगर हम बैठकर बानी को ध्यान से सुनें और हममें जो कमियां हैं उन्हें दूर करें।

तब पता लगता है जब हम बुरे कर्मों का नतीजा भोगने के लिए किस-किस जामें में आते हैं? आप देखें! सड़क पर ऊँट या बैल का एक्सीडेंट हो जाता है उनकी टाँगे टूट जाती हैं। हम उन्हें उसी तरह सड़क पर छोड़ आते हैं। जीवित होते हुए भी उन्हें कौए और कुत्ते खा रहे होते हैं हम उन्हें मरते हुए अपनी आँखों से देखते हैं। पास से कोई इंसान भी गुजरता है तो वह उनकी सहायता नहीं कर सकता। आजकल तो ऐसा जमाना है इंसान की कद्र भी पशु जैसी हो गई है।

हमने कभी यह नहीं सोचा कि यह जानवर भी कभी हमसे अच्छे इंसान या सेठ साहूकार होंगे। इंसानी जामे में जो गलतियाँ की ये आज उनका भुगतान कर रहे हैं? मुसलमानों की पवित्र किताब में आता है कि जब हम ऊँची योनियों में गलतियाँ करते हैं तो हमें निचली योनियों में जाना पड़ता है। कबीर साहब कहते हैंः

अस्थावर जंगम कीट पतंगा अनिक जन्म कीन्हें बहुरंगा।
कई जन्म भए कीट पतंगा कई जन्म गज मीन करंगा।

हमने अनेकों बार वृक्ष, कीड़े, पतंगे, मछली और हिरन के जन्म पाए। कई बार माता के गर्भ में आए और कई बार इस संसार में घर बसाकर चले गए। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

ऐसे घर हम बहुत बसाए जब हम राम गर्भ होए आए।

सोचकर देखें! हिरन की क्या हालत होती है पीछे से शिकारी आकर हिरन को गोली मार देता है हिरन घायल हो जाता है। वह भाग तो नहीं सकता अपनी बोली में पुकार करता है लेकिन कौन सुनता है?

परमात्मा ने हमें बड़ा ऊंचा इंसानी जामा दिया है। जब हम सन्त-महात्माओं के पास जाते हैं तो वे हमें बताते हैं कि सब बीमारियों की

दवाई 'नाम' है। यह दुनिया रोगी है इसमें 'नाम' ही दारू है लेकिन कोई ऊँचे भाग्यवाला ही 'नाम' की दौलत माँगता है। आमतौर पर हम महात्मा के आगे अपनी समस्याएं ही रखते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''कोई कहता है मेरी बीमारी दूर हो। कोई कहता है बेरोजगारी दूर हो।'' सोचकर देखें! हम जो चीज़ें माँगते हैं वे मिल जाती हैं हम और माँगने लग जाते हैं।

हमारी भी यही हालत है कि हम महात्मा के पास जाकर ऐसी बातें करते हैं जिनका कोई मतलब नहीं होता। हमें उनसे 'नाम' लेकर नाम की कमाई करनी चाहिए फिर अंदर जाकर जो मर्जी सवाल करें। सन्त हमें अन्धविश्वास नहीं देते। वे **सतसंग** में कहते हैं आओ, करो और देखो! मालिक आपके अंदर ज्योत-रूप, नाद-रूप होकर विराजमान है। आप उसे देख सकते हैं उससे बात कर सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी अपने **सतसंग** में कई बार यह कहानी सुनाया करते थे कि एक आदमी कुएँ में गिर गया उसने चीख पुकार की। कोई आदमी पास से गुजर रहा था उसने देखा कि इंसान का बच्चा कुएँ में गिरा पड़ा है इसे निकालना चाहिए। उसने कुएं में रस्सी लटकाकर कहा कि तू रस्सी को पकड़ मैं ऊपर खींचता हूँ लेकिन उसने ऐसा नहीं किया उसने कुएँ के अंदर से ही सवाल पूछने शुरू कर दिए कि यह कुँआ किसने लगवाया? यह कुआँ जंगल में क्यों लगावाया है? मैं इस कुँए में फिर तो नहीं गिर जाऊंगा? उस आदमी ने ऊपर से कई बार कहा कि तू रस्सी पकड़कर ऊपर आ, ये बातें बाहर आकर कर लेना। वह फिर कहने लगा कि इस कुँए में कितने आदमी आ सकते हैं? उस आदमी ने रस्सी छोड़कर कहा, "तेरे जैसे बेवकूफ बहुत आ सकते हैं।"

परमात्मा पहाड़, मन्दिर या मस्जिद में नहीं, वह हमारे अंदर है। हम उसे अंदर से ही मिल सकते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

शरीरों भालन को बाहर जाए, नाम न लए बहुत बेगार दुख पाए।

जो परमात्मा को शरीर से बाहर ढूँढ़ता है वह अपना समय खराब कर रहा होता है। कबीर साहब कहते हैं:

ज्यों तिल माही तेल है ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझमें जाग सके तो जाग।

जैसे तिल में तेल है, पत्थर में अग्नि है उसी तरह परमात्मा हमारे अंदर है। इसमें कोई शक नहीं कि परमात्मा हमारे अंदर है फिर हम उससे क्यों नहीं मिल सकते? परमात्मा पवित्र है क्योंकि हम उस जगह की खोज नहीं करते जहाँ परमात्मा रहता है। हम उन मालिक के प्यारों की खोज नहीं करते कि वे कौन है, क्या उपदेश देते हैं?

सन्तमत कोई समाज नहीं यह अपने आपको सुधारने का मत है। सन्त-महात्मा जब भी आए उनका हर समाज से प्यार रहा चाहे महात्मा मुसलमान थे वे हिन्दुओं के तीर्थों पर भी गए। साईं बुल्लेशाह अनेकों बार गंगा गए, उन्होंने वेद-पुराण भी पढ़े। बुल्लेशाह कहते हैं:

वेद पुरान पढ़-पढ़ थक्के सिजदे करदेयां घिस गए मत्थे।
न रब तीर्थ न रब मक्के जिस पाया तिस नूर अनवार।

बुल्लेशाह चालीस साल तक मस्जिद के मौलवी रहे। आपके पिता भी लाहौर की मस्जिद के मौलवी थे। आप सच्चाई के आशिक थे आपके दिल में ख्याल आया अगर मुझे और मेरे पिता को मस्जिद में बैठने से शान्ति नहीं मिली तो और जो लोग यहाँ आते हैं जिन्हें मैं शरा का पाबन्द बना रहा हूँ क्या उन्हें शान्ति आएगी?

महाराज कृपाल कहते थे, ''कुदरत का उसूल है कि भूखे को रोटी प्यासे को पानी जरूर मिलता है। हमारे दिल में तड़प है तो परमात्मा हमारे ऊपर रहम करता है अपने मिलने का उपाय करता है।''

शाह इनायत लाहौर के नज़दीक रहते थे। बुल्लेशाह का उनके एक सेवक के साथ मिलाप हुआ। उस सेवक ने बुल्लेशाह से पूछा, " मियाँ! तू रोज बाँगे देता है नमाज़ पढ़ता है, रोज़े रखता है क्या कभी

अंदर नूर देखा है? तू जिस नूर का मस्जिद में बैठकर जिक्र करता है क्या उस नूर से कभी तेरी आत्मा जुड़ी?" बुल्लेशाह आलापात्र था। जब अच्छे दिन आते हैं बारिश होनी होती है तो आसमान पर बादल छा जाते हैं। बुल्लेशाह के दिल में ख्याल आया झूठ बोलने से क्या फायदा! उसने कहा, "नहीं ऐसा तो कभी नहीं हुआ।"

उस सेवक ने कहा अगर तुझे कलमे के साथ जुड़ना है तो तू शाह ईनायत से जाकर मिल उनमें कलमा प्रकट है। शाह इनायत अराई जाति के थे जमींदारा करते थे। बुल्लेशाह ने शाह इनायत के पास जाकर कहा, ''मैं रब को पाने के लिए आया हूँ वह मुझे कैसे मिल सकता है? मुझे उससे मिलने का तरीका बताएं।''

शाह इनायत ने सोचा! यह बहुत पढ़ा-लिखा है अगर मैंने इसे ग्रन्थ-पोथियों की मिसाले दी तो यह नहीं समझ सकेगा। आप प्याज की खेती कर रहे थे। शाह इनायत ने कहाः

बुल्लेया रब दा की पौणा एधरो पुटना ते ओधर लौणा।

शाह इनायत प्याज की खेती को एक तरफ से उखाड़कर दूसरी तरफ लगा रहे थे जबकि देखने में तो यह बहुत छोटी बात है लेकिन इसमें बहुत बड़ा राज़ है। वह राज लोक-लाज है कि दुनिया को मन से निकालकर परमात्मा की तरफ लगाना है।

हम जानते हैं कि हम जब भक्ति करने लगते हैं अगर छोटी उम्र है तो माता-पिता भी ताने-मेहने मारते है कि पुत्र त्यागी हो गया है। वे हमें कई साधुओं के पास भी लेकर जाते हैं कि शायद इस पर भूत-प्रेत की छाया है? बहुत लोगों के साथ ऐसे वाक्यात गुजरे हैं। गुरु नानकदेव जी के माता-पिता भी आपको बहुत से वैद्यों के पास लेकर गए। आप अपनी बानी में लिखते हैंः

वैद्य बुलाया वैद्यगी पकड़ ढ़िढ़ोले बाँह।
भोला वैद्य न जाने कर्क कलेजे माँह।

आप कहते हैं कि वैद्य नब्ज़ देखता है, वह नहीं जानता कि मुझे क्या हुआ है? प्यार की आग बाहर नजर नहीं आती। प्यार न पहाड़ो में मिलता है न समुद्र की तह में मिलता है, न खेतों में उगता है, न बाजारों में बिकता है। प्यार दिल की लग्न है यह आत्मा से फूटकर बाहर आ जाता है। सच्चे प्रेम में दुनिया की गरज नहीं छिपी होती।

मैं बताया करता हूँ कि इस जगह मेरा भाई आया। उसने मुझसे कहा, ''मैंने सुना है कि तेरे ऊपर कृपाल ने जादू कर दिया है। तू मेरे साथ अमृतसर चल तुझे बिजली लगवा देते हैं।'' ऐसा हम सबके साथ ही बीतता है।

बुल्लेशाह के दिल में ख्याल आया कि लोक-लाज को कैसे दूर किया जाए! उसने कई ऐसे काम किए जो देखने वालों को अच्छे नहीं लगते। बुल्लेशाह सैयद जाति के थे। मुसलमान सैयद जाति वालों की पूजा करते हैं। लोगों ने निन्दा की कि यह एक सैयद होकर अराई की सोहबत में चला गया है इसने अपने खानदान को धब्बा लगा दिया है।

जब लोग इस बात से चुप हो गए तो बुल्लेशाह ने गधियाँ ले ली। तब लोगों ने कहा कि अब यह गधियाँ चराकर सैयदों की बची हुई इज्जत भी बर्बाद कर रहा है।

जब लोग चुप हो गए तो बुल्लेशाह मरासियों के साथ मिलकर नाचने-गाने लगे। लोगों ने कहा कि देखो! अब यह क्या कर रहा है? उस समय वक्त ऐसा था कि बड़े लोग कमजोर लोगों की बहु-बेटियों को उठाकर ले जाते थे। एक नवाब किसी गरीब की बीवी को उठाकर ले गया। उस गरीब ने बहुत लोगों के आगे मदद के लिए फरियाद की। किसी ने कहा कि बुल्ला परोपकारी है। उस गरीब ने बुल्लेशाह के पास जाकर विनती की। बुल्लेशाह ने तवज्जो देकर कहाः

अम्बावाली गली सुनींदी खज्जी वाला बाग।
खोतिया वाला साध बुलावे सुत्ती ऐ ते जाग।
चींणा इंज छडिदा यार.........................

बुल्लेशाह की तवज्जो से वह औरत वहाँ आ गई। बुल्लेशाह ने उस औरत से कहा कि तू अपने पति के साथ जा। किसी ने बुल्लेशाह के पिता से जाकर कहा, ''पहले तो बुल्लेशाह गधियाँ चराता था फिर मरासियों के साथ गाने-बजाने लग गया और अब साधु बनकर क्या-क्या खेल कर रहा है?''

बुल्लेशाह के पिता बहुत नाराज हुए। गुस्से से हाथ में माला और छड़ी लेकर बुल्लेशाह की तरफ चले आ रहे हैं। बुल्लेशाह के दिल में ख्याल आया कि इसने सारी जिंदगी माला फेर-फेरकर काट दी है; यह अंदर नहीं गया। जहाँ औरों पर दया की है आज इस बूढ़े पर भी दया कर दें। बुल्लेशाह ने तवज्जो देकर यह शब्द बोलाः

लोका दी जप मालियाँ ते बाबे दा जप माल।
सारी उम्र जपेन्दया ते खुथ न सकेया वाल।
चींणा इंज छडीदा यार...................... ।

लोगों के पास तो छोटी-छोटी माला हैं इस बाबे के पास बड़ी माला है। सारी उम्र जप-तप करके बिता दी लेकिन वही काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार है। उसे भी तवज्जो देकर रंग दिया। पिता हटाने आया था लेकिन उस पर भी 'नाम' का रंग चढ़ गया। बाप-बेटा लाहौर की मस्जिद के मौलवी थे। दोनों लोक-लाज छोड़कर बाजार में नाचने लगे, बाप ने भी साथ में सद मिला दीः

पुत्र जिन्हा दे रंग रंगीले माँ पे लैन्दे तार।
चींणा इंज छडीदा यार..................... ।

सन्तों की तवज्जो को वही जानते हैं जो अंदर जाते हैं। लोहे को चुम्बक का पता तब चलता है जब लोहा चुम्बक के दायरे में आता है। इसी तरह इच्छाधारी साँप शिकार के लिए खुद नहीं जाता वह शिकार को अपने पास खींच लेता है। सन्तों की तवज्जो भी बड़ा काम करती है चाहे कोई हजारों मील दूर बैठा हो सन्त अपनी तवज्जों से उसकी संभाल करते हैं। सन्त सच्चखण्ड से भी अपने बच्चों की संभाल करते हैं।

हमारे पास ऐसे बहुत पत्र आते हैं कि महाराज सावन को शरीर छोड़े हुए बहुत समय हो गया है लेकिन आज भी आप अपनी आत्माओं की संभाल कर रहे हैं। हिन्दुस्तान ही नहीं पश्चिम के लोग भी इस बात की हामीं भरते हैं कि महान ताकत सावन-कृपाल ने हमारी संभाल की।

महात्मा हमें बताते हैं कि जब परमात्मा मेहर करता है तो हमारी आत्मा में तड़प उठती है। हम सच-झूठ का निर्णय करते हैं कि हमें वह सच्ची चीज़ मिले जो कभी फनाह न हो। उसकी खोज़ के लिए हम मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारों में जाते हैं। हम आस-पास देखते हैं कि हमारा यह मसला कहाँ से हल हो? ऐसी हालत उन्हीं की होती है जिनके अंदर विरह और तड़प है।

खोज़ करते हुए हमें जब गुरु मिल जाते हैं तो वह **सतसंग** में हमें प्यार से समझाते हैं, ''देख प्यारेया! जब पानी बादलों से बारिश बनकर जमीन पर गिरता है तो बिल्कुल साफ होता है। वह पानी जमीन पर गिरकर गंदी जगह इकट्ठा हो जाता है तो उसमें से बदबू आने लगती है। जब उस पानी को सूरज की तपिश मिलती है तो वह भाप बनकर उड़ जाता है फिर बादलों में समा जाता है तब उसे पता लगता है कि मैं पहले भी साफ था अब भी साफ हूँ।''

हमारी आत्मा पवित्र थी लेकिन नीचे के मण्डलो में आकर जहाँ मन का राज्य है यह अति मैली हो गई अपने आपको भूल गई। जब यह 'शब्द' की तपिश पाकर ऊपर जाती है मालिक के साथ मिल जाती है तब इसे पता लगता है कि मैं तो ऐसे ही विषय-विकारों के गंद में गंदी हो रही थी। आपके आगे स्वामी जी का शब्द रखा जाता है गौर से सुनेंः

खोजत रही पिया पंथ मर्म कोई नैक ना गाया।
रैन दिवस बेचैन तरसते जन्म बिताया।।

आप प्यार से कहते हैं, ''मैंने दिन-रात परमात्मा की खोज की उसे हर जगह ढूँढ़ा क्योंकि दिन में हमारे अंदर जिस चीज़ की तड़प,

लग्न होती है रात को उसी के स्वपन आते हैं।'' गुरु रामदास जी अपने दिल की हालत बयान करते हैंः

अन्तर प्यास उठी प्रभु केरी, सुन गुरु बचन मन तीर लगइए।

आप कहते हैं कि हमारे दिल में परमात्मा की प्यास उठी तो हमने परमात्मा की हर जगह खोज की। जब गुरु अमरदेव जी से मिले तो उन्होंने कहा, ''परमात्मा तो तेरे अंदर बैठा है।'' उनका यह वचन दिल में तीर की तरह चुभ गया कि इतनी पवित्र चीज़ हमारे अंदर है और हम उससे मिल नहीं सके। जब उनके कहने के मुताबिक अंदर गए दर्शन किए तो आत्मा वहाँ लोटपोट हो गई।

आकल बिकल भई गुरु देखे हौं लोट पोट होए पईए।

स्वामी जी महाराज भी यही कहते हैं कि हम दिन को भी तड़पे रात को भी तड़पे, बहुत जगह गए। जिनके पास भी गए उन्हें खुद को ही चैन नहीं था तो हमें क्या चैन मिलना था? जन्म बीत गया पर दिल की लगी को बुझाने वाला कोई नहीं मिला।

करता रहा पुकार दाद को कहीं ना पाया।
भेख भिखारी जगत गुरु सब भरमें माया।।

आप कहते हैं कि हमने बहुत पुकार की कि हमें परमात्मा से मिलाओ हमें उससे मिलने का शौक है। हम बड़े-बड़े मठ्ठों में गए। बहुत योगियों के पास भी गए लेकिन सब जगह माया का ही पसारा था। सब बाहरमुखी कर्मकांडो में उलझे हुए थे। सब जगह एक-दूसरे की निन्दा ही सुनने को मिली।

मैं अपनी खोज़ के मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मैं बहुत समाजों में गया लेकिन मैंने कभी किसी की निन्दा नहीं की अगर किसी में कोई कमी नजर आई तो मैं चुप करके चला आया दोबारा वहाँ नहीं गया। मैंने अपनी खोज़ जारी रखी। जंगल में शेर भी होते हैं सारे ही गीदड़ रंगे नहीं होते।

आखिर बाबा बिशनदास जी के पास पहुँचा। उनके पास बहुत लोग बैठे हुए थे। कोई उनसे बीमारी दूर करने के लिए तावीज माँग रहा था तो कोई झाड़-फूँक करने के लिए कह रहा था। बाबा बिशनदास जी इस पाखंड के सख्त खिलाफ थे; आप सच्चाई पसंद थे। आप कहते, ''देखो प्यारेयो! अगर धागे-तावीज या झाड़-फूँक से कुछ होता हो तो आप गर्मी-सर्दी क्यों आने देते हैं? अगर आपसे ऋतु तब्दील नहीं होती तो यह धागे, तावीज आपकी बीमारी कैसे ठीक कर देंगे? लोगों का धन कैसे आपके घर आ जाएगा?''

मैं बताया करता हूँ कि मैं एक बार अपनी बहन के घर गया। उसने दूध बिलोने वाले बर्तन पर तावीज बाँधा हुआ था। यह देखकर मुझे बड़ी हैरानी हुई। मैंने उससे पूछा कि यह तावीज क्यों बाँधा हुआ है? वह कहने लगी, "हमारे पड़ोसियो ने अपने घर में तावीज बाँधा तो हमारे घर का घी उनके घर जाने लगा।" मैंने कहा, "मैंने सुबह देखा कि पड़ोसियों का सारा मक्खन तुम्हारे घर आ रहा था।"

सोचकर देखें! वहम की कोई दवाई है? वैद्य लुकमान बड़े अच्छे हकीम थे मुर्दे को भी जिन्दा कर सकते थे। मैंने उनकी वैद्यक किताबों में बीमारियों के अच्छे-अच्छे नुस्खे पढ़े हैं। मैं खुद भी वैद्यक करता रहा हूँ लेकिन वहम की कोई दवाई नहीं पढ़ी।

आप देखें! अगर तावीज करवा लेने से लोगों का घी आपके घर में आ जाए तो किसी को काम करने की मेहनत करने की क्या जरूरत है? महात्मा कहते हैं, ''यह सब अज्ञानता है। इसमें आपका फायदा नहीं।''

बाबा बिशनदास जी पास बैठे लोगों को बड़े प्यार से समझा रहे थे कि ये बीमारियाँ आपके पिछले कर्मों की वजह से हैं। आगे के लिए अपना जन्म सुधारें। अच्छी सोहबत में **सतसंग** में जाने से आपका फायदा होगा अगर अपनी औलाद को नेक बनाना चाहते हैं तो खुद नेक बनें लेकिन हम सोचते हैं कि हमारी औलाद नेक बने और हम खुद न बने।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी **सतसंग** में कई बार यह कहानी सुनाया करते थे कि किसी लड़की का एक बादशाह के लड़के के साथ प्यार था। लड़के वालो ने लड़की वालों से रिश्ता माँगा तो उन्होंने इंकार कर दिया। लड़की ने कहा, ''मैं शाम को अपने घर से ऊँटनी ले आऊँगी और हम दोनों चले जाएंगे।'' उस समय आज की तरह जीपें या कारें नहीं होती थी।

रात होने पर लड़की ऊँटनी ले आई। वे दोनों ऊँटनी पर बैठकर जा रहे थे कि रास्ते में एक छोटा सा नाला आया तो लड़की ने लड़के से कहा, "ऊँटनी के नकेल की रस्सी खींच क्योंकि इसे पानी में बैठने की आदत है ; इसकी माँ को भी यही आदत थी।" लड़के के दिल में ख्याल आया कि पशु-पक्षियों पर भी यह असर है अगर माँ अच्छी है तो उसका बच्चा भी अच्छा होगा।

आज यह लड़की मेरे साथ यह कर्म कर रही है तो कल इसके पेट से जन्म लेने वाला बच्चा कैसा होगा? अगर मेरी लड़की भी ऐसा कर्म करेगी तो क्या मेरा नाम बदनाम नहीं होगा? यह सोचकर लड़के ने लड़की से कहा, "मैं कोई खास कीमती चीज़ घर में भूल आया हूँ अभी रात बड़ी लंबी है, हम वह चीज लेकर वापिस आ जाएंगे।"

लड़की नहीं जानती थी कि यह मन बदल चुका है। वे दोनों महल में वापिस आ गए। लड़का हाथ जोड़कर बोला, "हम जिंदगी में बहुत बड़ी गलती करने जा रहे थे। तू अपने घर में आराम की जिंदगी बिता; इसी में हमारी बेहतरी है।" समय का पता नहीं होता कि एक ही शब्द हमारी जिंदगी पलट देता है। इसलिए सन्त **सतसंग** पर जोर देते हैं।

शब्द बिना खाली फिरें सब धोखा खाया।
अब मिल गए पूरे सतगुरु उन भेद सुनाया।।

अभी भी किसी-किसी गाँव में ऐसा होता है कि वंशावली गुरु साल या छः महीने के बाद प्रेमियों के घरों में फेरा डालते हैं। घरवाले उन्हें

कुछ न कुछ चढ़ावा भी देते हैं लेकिन उनके पास फोकी आशीषों के अलावा कुछ भी नहीं होता।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि जब वंशावली गुरु हमारे घर आते तो हम उसे एक रूपया दिया करते थे। उस समय एक रूपये की बहुत कीमत थी। जब मुझे बाबा जयमल सिंह जी मिल गए, 'नाम' मिल गया। मैं घर गया तब वह वंशावली गुरु हमारे घर आए तो मैंने उन्हें दस रूपये देकर कहा, ''बाबा! अब हम तुझसे छूटे और तू हमसे छूटा। हमें पूरे गुरु मिल गए हैं; हमें अंदर जाने का 'शब्द' मिल गया है अब न तू हमारे पास आना न हम तेरे पास आएंगे क्योंकि तेरे पास 'शब्द-नाम' का भेद नहीं है।''

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''ऐसे वंशावली गुरुओं में यही कमी है कि उनके पास 'शब्द-नाम' का प्रचार नहीं। देखा-देखी दुनिया उनके पास जाती है बहुत भीड़ होती है। माया चढ़ती है और सोने के मंदिर हैं लेकिन उनके पास 'शब्द-नाम' नहीं। हमारे ऊँचे भाग्य थे कि हमें पूरा सतगुरु मिल गया उसने हमें अंदर जाने का भेद बता दिया।''

सुरत सार लिखवाई के फिर गगन चढ़ाया।
गगन मंडल में पहुँचकर अनहद बजवाया।।

सन्त-महात्मा हमें कर्म-काण्ड, रीति-रिवाज़ में नहीं फँसाते बल्कि ऊपर जाने का साधन और तरीका बताते हैं। वे केवल तरीका ही नहीं बताते हमारे साथ होकर हमारी मदद भी करते हैं। जब हम देह रूप में होते हैं तो सन्त-सतगुरु भी परमात्मा के हुक्म से देह धारकर आते हैं। जब हम उनकी बताई हुई युक्ति से सिमरन करके आँखों के पीछे आते हैं, सहँसदल कँवल पर पहुँचते हैं तो वे हमें शब्द-रूप नजर आते हैं।

आप कहते हैं कि जब हम उस मंजिल को तय करके सूरज, चंद्रमा, सितारों से ऊपर चले जाते हैं वहाँ स्थूल देश में स्थूल माया है ब्रह्म गुप्त है। सहँसदल कँवल में माया और ब्रह्म बराबर-बराबर हैं

लेकिन माया का वहाँ भी जोर है। ऊपर से घंटे की आवाज आ रही है सतगुरु उस आवाज को पकड़वाकर हमसे कहता है कि ऊपर चल! हम ब्रह्म के देश में जाते हैं तो वहाँ सतगुरु शब्द रूप है; वहाँ माया नाममात्र होती है और ब्रह्म प्रकट होता है।

सतगुरु की दया से जब हम ऊपर के 'शब्द' को पकड़कर पारब्रह्म में जाते हैं वहाँ पवित्र शब्द है और गुरु पवित्र शब्द-रूप धारण करता है हमारी सुरत उसकी शिष्य बनती है। यह सब सतगुरु का काम है वह हमें बताता है कि किस तरह सुरत को इकट्ठा करना है, किस तरह आँखों के पीछे सुरत को खड़ा करना है और किस तरह सूरज, चन्द्रमा और सितारों को पार करके हमने गुरु स्वरूप तक पहुँचना है। अंदर जाकर ही हमारी आत्मा सच्ची सेविका बनती है।

यह सतगुरु की दया-मेहर है कि वह हमें मंजिल-दर-मंजिल अंदर ले जाते हैं किसी रीति-रिवाज़ में नहीं फँसाते और न ही हमारे ऊपर कोई अहसान करते हैं। सन्त जब देह में होते हैं तो वे कभी यह नहीं कहते कि आप हमें गुरु कहें, पीर कहें या महात्मा कहें। वे तो यही कहते हैं कि आप हमें बड़ा भाई समझ लें! दोस्त समझ लें! या बुजुर्ग समझ लें! लेकिन अंदर जाकर देखें कि सच्चाई क्या है?

जब योगियों ने गुरु नानकदेव जी से पूछा कि आपके गुरु कौन है, आप किसके शिष्य हैं? तब गुरु नानकदेव जी ने कहा कि शब्द हमारा गुरु है और आत्मा शिष्य है।

शब्द गुरु सुरत धुन चेला।

जपी तपी मौनी बकी जत जोग चलाया।
यह मारग कोई ना कहे दुर्लभ दरशाया।।

आप कहते हैं कि हम जब बाहर गए हमें जपी, तपी, मौनी मिले लेकिन किसी ने भी मुक्ति का साधन 'सुरत-शब्द' का अभ्यास नहीं बताया। किसी एक शब्द को बार-बार दोहराने को जप कहा जाता है।

मैंने अपनी जिंदगी में आठ-आठ घंटे जप किया है। किसी ने मुझे यह बताया कि जितनी बार जाप करें उस जाप को कागज पर लिखकर आटे में मिलाकर उसकी गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाएं जब वे मछलियाँ आटा खाएंगी तो आपको आशीष देंगी। जिनके दिल में तड़प होती है उनके लिए यह सब कुछ करना मुश्किल नहीं होता।

मौनी उसे कहते हैं जो जुबान से न बोले लिखकर माँग ले। मैं अपनी जिंदगी में कई मौनियों से मिला हूँ उनमें ईर्ष्या, काम और क्रोध की आग भड़कती देखी है। दुनिया के पदार्थों के लिए उनका हृदय दूसरों से ज्यादा कल्पना करता है।

यहाँ **सतसंग** में एक मौनी के दो सेवक भी बैठे थे। उन्होंने मेरे आगे कई बार उस मौनी की तारीफ की। मैं पंजाब में उस मौनी के पास गया। प्रेमी मौनी को दर्शनों के लिए बुलाने गए तो वह नाराज हो गया। जब मैंने उसे पाँच का नोट दिखाया तो उसकी खुशी की हद न रही। उसने लिखकर कहा कि मैंने तो माया त्यागी हुई है और अपनी गद्दी का कपड़ा उठा दिया कि माया यहाँ रख दे।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर जुबान से न माँगा और लिखकर माँग लिया! बीमारी तो वही रही।'' गुरु नानक कहते हैंः

मौनी होए बैठा अधूती हृदय कल्पना गाठा।

कबीर साहब कहते हैं कि जुबान से न बोले तो क्या हुआ हृदय तो दुनिया के पदार्थों के लिए तड़प रहा है अगर मौनी होने से परमात्मा मिलता होता तो उन्हें मिल जाना चाहिए था जो गूँगे हैं। परमात्मा का रास्ता पूर्ण सन्तों को पता है। सन्त-महात्मा अपना कोई रास्ता नहीं चलाते। यह रास्ता उतना ही पुराना है जितना इंसान पुराना है।

जैसे परमात्मा हमारे हाथ, नाक, कान सब कुछ ही बनाता है वैसे ही परमात्मा अपने मिलने का रास्ता भी खुद ही बनाता है। हम उस रास्ते को कम नहीं कर सकते बढ़ा नहीं सकते तब्दील नहीं कर सकते।

धन सन्त और सतगुरु जिन सार बुझाया।
मनमत जग में फैलया गुरमत नहीं आया।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हम अपने सतगुरु का धन्यवाद करते हैं जिसने न कौम छुड़वाई न मजहब छुड़वाया और न ही हमसे कोई फीस माँगी। मुफ्त में ही अपना भेद दिया, मदद की। हमारा इंसानी जामे में आने का मकसद पूरा हुआ।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बलिहारी गुरु आपने दयो हाड़ी सदवार।
जिन मानस ते देवते किए करत न लागी वार।

आप कहते हैं कि हम अपने गुरु पर बलिहार जाते हैं जिसने हमारी राक्षस बुद्धि को देवता बुद्धि कर दिया। हम उसका क्या धन्यवाद करें जिसने हमसे कुछ भी नहीं माँगा। न कौम छुड़वाई, न बाल-बच्चे छुड़वाए, न बेटे-बेटियाँ छुड़वाई।

सुरतवन्त बिरले कोई जिन शब्द कमाया।
राधास्वामी भेद दे सब जीव चेताया।।

आप कहते हैं कि हमारे भाग्य की बात है अगर हमारे अच्छे कर्म हों तो हम **सतसंग** में आए। हमें हमारी कमियों का पता लगे और हम सतसंग पर अमल करें। उससे भी ऊँचे भाग्य हों तो 'नाम' मिल जाए और हम नाम की कमाई करने लग जाएं। कोई विरला अच्छे भाग्यवाला सुरतवन्त ही 'नाम' की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे इंसानी जामे में कई ऐसी कौमें ऐसे मजहब और ऐसे मुल्क हैं जहाँ के लोग परमात्मा की भक्ति की तरफ नहीं आ सकते क्योंकि मनमत दुनिया में इतना फैल चुका है वे कहते हैं कि खाओ पिओ मौज उड़ाओ और नरक को जाओ।

मनमत इतना फैला हुआ है कि हमारा मन गुरुमत पर चलने के लिए तैयार ही नहीं। मनमत यह कहती है कि आपसे पूछने वाला कोई

नहीं आप जो मर्जी करें लेकिन गुरुमत कहती है कि आपको श्वाँस-श्वाँस का लेखा देना पड़ेगा आप सोच-समझकर कदम रखें। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं :

जिनी ऐसा हरि नाम न चेतया से काहे जग आए।
ऐह मानस जन्म दुर्लभ है नाम बिन बिरथा सब जाए।

प्यारेयो! जिस परमात्मा ने इतनी बड़ी दुनिया बनाई है वही इसका मालिक है। आप ऐसा न सोचें कि हम बेलगाम फिरते हैं हमारी लगाम किसी के हाथ में हैं अगर ऐसा न हो तो बड़े-बड़े तानाशाह दुनिया में हुए हैं उन्हें तो मौत ही न आती! वे जरूर आज इस दुनिया में होते। कबीर साहब कहते हैं :

ऐह तन कागज की पुड़िया बूँद पड़त गल जाओगे।
कहत कबीर सुनो भई साधो इक नाम बिना पछताओगे।

स्वामी जी महाराज ने हमें बड़े प्यार से समझाया कि इंसानी जामा उत्तम है। परमात्मा ने हमें अपनी भक्ति का मौका दिया है। हमने इस जामें में बैठकर 'शब्द-नाम' की कमाई करनी है अगर यह जामा हाथ से निकल जाता है जैसे पशु-पक्षी आज इंसानी जामे के लिए तड़प रहे हैं तो हमारी भी यही हालत होगी।

✫✫✫

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

गुरु **प्रेम** के कारण मालिक से साथ रूचि और शौक सा बन जाता है जिस वजह से चैन प्रतीत होती है, सिमरन में मन लगने लग जाता है। ज्यों-ज्यों गुरु के साथ प्यार बढ़ता जाता है मालिक के साथ मौहब्बत बढ़ती जाती है और हरदम उसका जिक्र करने का दिल करता है। जिक्र करने से ठंडक प्रतीत होती है।

मालिक रूपी गुरु का नाम लेने से शिष्य ठंडे साँस भरने लग जाता है, आँखों से आँसू बहने लगते हैं और रूह व्याकुल हो जाती है। उस तड़प में अपना आप भूल जाता है; तन-बदन की सुरत नहीं रहती। गुरु साहब फरमाते हैं:

राम गुरु मोहन मोह मन लिए।
हौं आकुल विकल भए गुरु देखे हौं लोटपोट हुए पइए।

गुरु ने मेरा मन मोह लिया है। मैं उसे देखने के लिए व्याकुल होकर लोटपोट हो जाता हूँ। वह उस जागृत रंग में जाग उठता है जो रस और मस्ती से भरा है। गुरु **प्रेम** से सूने हृदय इस अमृत की चाट को क्या जानें? बुल्लेशाह कहते हैं:

कोठे ते चढ़ देवां होका, ईश्क बिहाजे कोई न लोको।

प्रेम की जलती आग में प्रेमी का सब कुछ भस्म हो जाता है। इस असहाय दुख के कारण वह दुनिया को होका देकर कहता है कि **प्रेम** से दूर रहें। जिसके तन को लगी हो वही इस गति को जानता है दूसरा क्या जानेगा? आप कहते हैं:

जेकर मैं ऐह जाणदी प्रीत करे दुख होए।
नगर ढिढोरा फेरदी प्रीत न करयो कोए।

प्रेमी उसके बिछोड़े में पागल कहलवाता है लेकिन उस रस में लीन होने के कारण मुँह, कान और आँखें बंद कर लेता है। साईं बुल्लेशाह इस अवस्था का मनोहर वचनों में जिक्र करते हैंः

ईश्क असां नाल केही कीती लोक मरेंदे ताने।
दिल दी वेदन कोई न जाने अंदर देश बेगाने।
जिसनूं चाट अमर दी होवे सोई ओह अमर पछाने।
देश ईश्क दी ओखी घाटी जो चढ़या सो जाने।
ईश्क असां नाल .....

आतिश ईश्क फराक तेरे ने पल विच साड़ वखाईयां।
इस ईश्क दे साड़े कोलों जग विच देआं दुहाईयां।
जिस तन लग्गे सो तन जाने दूजा कोई न जाने।
ईश्क असां नाल .....

हिजर तेरे तो झल्ली बनके कमली नाओं सदाया।
सुम्मन बुक्मन उमीउन होके अपना वक्त लंघाया।
कर हुण नजर कर्म दी साईयां न कर जोर तंघाने।
ईश्क असां नाल .....

ईश्क कसाई ने जेही कीती हर गज खबर न काई।
ईश्क चुवाती लाई छाती फेर न झाती पाई।
माँ प्यों कोलों छुप छुप रोवां कर कर लख बहाने।
ईश्क असां नाल .....

जब ऐसे लोग मुर्शिद की सूरत को देखते हैं तो उनकी हालत कुछ और ही हो जाती है, अंदर **प्रेम** की ज्वाला भड़कने से वे कुछ और ही नजर आते हैं। मुर्शिद को देखकर उनके अंदर बेख्तियार मालिक की रसभरी याद शुरू हो जाती है तब सुरत सुख मनाती है। शिष्य का गुरु की रूह के साथ संगम होता है, वे दोनों एक जान हो जाते हैं।

गुरु की अचरज हालत शिष्यो को अपने रंग में रंग लेती है। यही **प्रेम** या ईश्क का रस है जिसे मुसलमान फकीरों ने शराब कहकर बयान किया है। ऐसी अवस्था की प्राप्ति की निशानी यह होती है कि

मुर्शिद शिष्य की गर्मी-सर्दी अपने ऊपर ले लेता है। नफा-नुकसान समझने वाले लोग इस हालत के बारे में क्या समझ सकते हैं! मालिक की मेहर प्राप्त करने के लिए गुरु की मेहर प्राप्त करनी जरूरी है। एक को मालिक से मौहब्बत है और दूसरे को मुर्शिद से मौहब्बत है इनमें से कौन परमात्मा के नजदीक है?

मुर्शिद के बिना मालिक से मौहब्बत नहीं हो सकती क्योंकि मालिक हमारी आँखों से ओझल है। गुरु के अंदर मालिक झलक देता है इसलिए उसका प्यार मालिक का प्यार है अगर ईश्क इलाही प्राप्त करना चाहते हैं तो रब के आशिकों की सोहबत करें। गुरु के साथ जितनी मौहब्बत बढ़ती जाती है उतना ही मालिक का ईश्क बढ़ता जाता है; अंदर के नजारे खुलने शुरू हो जाते हैं। कभी बिजली का चमकना! कभी तारे का नजर आना! कभी सूरज-चाँद नजर आना! कभी गुरु की सुशोभित मूर्त नजर आना! कभी ब्रह्म-पारब्रह्म पार करके वहाँ के नजारों को देखना! लेकिन गुरु शिष्य को यह भेद खोलने से रोकता है क्योंकि भेद का प्रगट करना कुफ्र होता है।

मुर्शिद की खास तवज्जो, मेहर के कारण अंदर के नजारे और मालिक का ईश्क दिनोदिन बढ़ता है। शिष्य खुशी में फूला नहीं समाता। शिष्य की खुशकिस्मती ऊँचे भाग्य की हद नहीं लेकिन ईश्क में मुर्शिद का रूठना और बेपरवाही शिष्य के लिए नर्कों की घोर सख्ती से लाखों गुणा ज्यादा दुखदायी है। मुर्शिद का रूठना शिष्य की जान पर हजारों आफतें और कयामतें लाता है। कबीर साहब फरमाते हैं:

हरि रूठे तो ठौर है गुरु रूठे नहीं ठौर।

हरि रूठ जाए तो शिष्य के लिए ठिकाना है अगर गुरु ही रूठ जाए तो उसका कौन सा ठिकाना है? गुरु के अंदर **प्रेम** की कशिश का जल्वा होता है जो सच्चे शिष्य को अपनी तरफ खींचता है और जहान की सारी नियामतों से दिल हटाकर शिष्य को अपनी तरफ ले आता है। यह एक चुम्बकीय कशिश है जो उसकी हर अदा और नाज से जाहिर होती है।

मुर्शिद की जलाली शान, बेरुखी, मात्थे पर सलवटे डालना, मुँह फेर लेना, हमदर्दी की बातें करना और मुस्कुराना सभी अदाएं सच्चे शिष्य को मोहित करती हैं। उसकी जलाली शान में जमाली शान झलक देती है। हाफिज साहब जिक्र करते हैं कि मुर्शिद के लाल-लाल नाजुक हाठों पर सख्त कलामी सजती है। गुरु रामदास जी इस बारे में फरमाते हैंः

जे गुरु झिड़के तो मीठा लागे, जे बख्शे तो गुरु वडयाई।

यह अवस्था उन प्रेमियों की है जो प्रीतम में समाए हुए हैं। मुर्शिद इस रूठने में अपने इशारों से शिष्यों की हस्ती को फनाह करता है। कभी प्यार देकर उनकी रूह को ऊँचा भी करता है। कई बार यह भी देखने में आया है कि मालिक के सच्चे प्रेमियों के विसाल की तलब में उनका एक-एक पल एक-एक साल के बराबर गुजरता है।

मालिक और उसके साथ मौहब्बत करने वालों के साथ मौहब्बत करें। हर एक इंसान के अंदर यह ख्वाहिश है कि मैं किसी का प्यारा बनूं! कोई मेरा प्यारा बने! मैं किसी के साथ **प्रेम** करूं और कोई मेरे साथ प्रेम करे ताकि वह मेरे काम आए और मैं उसके काम आऊं! यह जज्बा हैवानों में भी मौजूद है पर देखने वाली बात यह है कि किसके साथ **प्रेम** करना फलदायक है?

दुनिया और दुनिया की चीजों के साथ प्यार करना दुख का कारण है क्योंकि ये सब चीजे फनाह हैं; एक न एक दिन हमसे छूट जाएंगी या मौत के समय हम इन्हें छोड़ जाएंगे। इसलिए किसी ऐसी हस्ती के साथ प्यार किया जाए जो फनाह न हो और हमसे दूर न हो।

न ओह मरे न होवे शोक।

★★★